Major semester-1 2025-2029 DATE- 13/02/2026

Characteristics of Operant Behaviour.

(i) प्रवर्तित व्यवहार - स्किनर के अनुसार सीखने की परिस्थिति में प्राणी का व्यवहार प्रवर्तित होता है। यह बात चूहे तथा कबूतर के व्यवहार से स्पष्ट हो जाती है। चूहा बक्से के अन्दर घूमता - फिरता है। और लीवर के नजदीक जाकर उसे दबाता है। अत: उसका व्यवहार उस वातावरण में परिचालित है। यह परिचालित व्यवहार या प्रतिक्रिया का प्रमाण भोजन का प्राप्त होना है। यही बात कबूतर के साथ भी लागू होती है। यह विशेषता क्लासिकी अनुकूलन यानि प्रत्यावर्ती अनुकूलन में नहीं है।

(ii) साधनात्मक व्यवहार :- इस सिद्धान्त के अनुसार प्राणी का व्यवहार या प्रतिक्रिया प्रबलन को प्राप्त करने में साधन का कार्य करती है। प्रबलन का प्राप्त होना यानि नहीं उसके अपने व्यवहार पर आधारित है गलत क्रिया करने पर प्रबलन नहीं मिलता है और सही क्रिया करने पर प्रबलन मिलता है। चूहा जब लीवर दबाता है तो उसे भोजन मिलता है। अत: भोजन प्राप्त करने के लिए उसका व्यवहार साधनात्मक है। इसी तरह कबूतर का सही स्थान पर चोंच मारना भोजन प्राप्त करने में साधनात्मक है -

(iii) प्रबलन - स्किनर ने सीखने या अनुकूलन के लिए प्रबलन को आवश्यक माना, इस दृष्टिकोण से वे थॉर्नडाइक, पैवलॉव हल आदि के निकट है क्योंकि इन मनोवैज्ञानिकों ने भी सीखने में प्रबलन को आवश्यक माना, परन्तु इस दृष्टिकोण से वे टोलमैन से दूर है क्योंकि टोलमैन ने प्रबलन को सीखने के लिए आवश्यक नहीं माना इस प्रकार स्किनर प्रबलन सिद्धांतवादियों की श्रेणी में आते हैं -

(iv) व्यवहार सुधारना - प्रबलन से प्राणी के व्यवहार को सुधारित किया जाता है। इस आधार पर पशुओं को जटिल कार्य सिखलाया जाता है। जैसे - स्किनर ने कबूतर को पहले बायें से परिक्रमा करना और फिर कोने के कुंजी पर चोंच मारकर दाना प्राप्त करना सिखाया -

और अन्त में उस व्यवहार को सुगठित किया - सर्वप्रिय कबूतर को बाद में जब भी स्किनर बॉक्स में बन्द किया जाता था,

(v) उत्तेजना सामान्यीकरण :- जब कोई तटस्थ उत्तेजना किसी अनुक्रिया को उत्पन्न करने के लिए अनुबन्धित हो जाती है, तब वह अनुक्रिया उस उत्तेजना से मिलती-जुलती उत्तेजनाओं से प्राप्त होने लगती है जिसे उत्तेजना सामान्यीकरण कहते हैं। स्किनर ने अपने अध्ययनों में देखा कि जब चूहे ने कुंजी दबाकर भोजन प्राप्त करना सीख लिया तो उसे कुछ भिन्न दूसरे बक्से में छोड़ा गया, वहाँ चूहे ने अपनी उसी प्रतिक्रिया को दुहराया, थामस एवं स्किनर ने चूहा-भूलैया के आधार पर उत्तेजना सामान्यीकरण को सिद्ध किया।

(vi) उत्तेजना विभेद :- उत्तेजना विभेद का अर्थ है कि जब प्राणी एक परिस्थिति में कोई व्यवहार सीख लेता है तो उस परिस्थिति से भिन्न परिस्थितियों में उसे नहीं दुहराता है। स्किनर ने कबूतर को स्किनर बॉक्स में दाना प्राप्त करना सिखाया।

(vii) विलोप - पैवलव के क्लासिकल अनुबन्धन की तरह इसमें भी विलोप की विशेषता पायी जाती है। विलोप का तात्पर्य यह है कि प्राणी उत्तेजना की प्रति व्यवहार करना सीख ले और उसे पुनर्बलन नहीं मिले तो धीरे धीरे व्यवहार समाप्त हो जाता है।

(viii) स्वतः पुनः प्राप्ति - अनुबन्धन होने के बाद यदि उसे पुनर्बलन नहीं दिया जाता है तो धीरे धीरे अनुबंधित अनुक्रिया को प्राणी भूल जाता है। स्किनर ने देखा कि भोजन के अभाव में चूहे ने कुंजी दबाना बंद किया लेकिन कुछ समय बाद उसने स्वतः कुंजी को दबाया।

इस तरह स्किनर का क्रियाप्रसूत एवं वैज्ञानिक सिद्धांत ही - रचना - बाइबल तथा गायत्री की तरह शिक्षा से संबंधित आदतों क्रियाओं को व्यावहारिक पक्ष पर बल दिया है — Pk 13/04/2020.